(ii) उपभोक्ता की अज्ञानता एवं विवेकहीन व्यवहार का अभाव — इस नियम में यह मान्यता रखी गई है की उपभोक्ता का व्यवहार विवेकहीन होता है वह अधिकतम संतुष्टि को प्राप्त करना चाहता है लेकिन यह भी सत्य है की उपभोक्ता हमेशा विवेक से कार्य नहीं करता उपभोक्ता को प्रतिदिन विभिन्न मदों पर व्यय करना पड़ता है। वह हमेशा वस्तुओं से मिलनेवाली उपयोगिता का हिसाब-किताब नहीं रखता, न ही उसका दिमाग गणना मशीन है, जो हमेशा सम-सीमांत उपयोगिता की जानकारी अनुसार वस्तुओं पर खर्च करे। उपभोक्ता जानकारी के अभाव में, रीति-रिवाज और फैशन के प्रभाव में वैसी वस्तुओं पर भी खर्च करता है जिनकी सीमांत उपयोगिता कम होती है, अतः उसे अधिकतम संतुष्टि की प्राप्ति नहीं होती।

(iii) वस्तुओं के सूक्ष्म-विभाजन-संबंधी कठिनाई :— कुछ वस्तुएँ ऐसी होती है जिनका सूक्ष्म विभाजन नहीं हो सकता, ऐसा करने पर वस्तु की उपयोगिता नष्ट हो जा सकती है। ऐसा होने पर सीमांत उपयोगिता नहीं जानी जा सकती। उदाहरण के लिए, हीरा या बंस — इन्हें छोटी इकाइयों में नहीं बाँटा जा सकता, इसलिए खर्च की जानेवाली मुद्रा की सीमांत उपयोगिता की माप नहीं की जा सकती।

(iv) बजट अवधि की अनिश्चितता :— प्रो० बोल्डिंग के अनुसार, हमारी बजट अवधि निश्चित नहीं है जबकि यह सिद्धांत उपभोक्ता के हाथ में साधनों की निश्चित मात्रा की मान्यता पर आधारित है। अधिकांश उपभोक्ता आय तथा व्यय का बजट नहीं बनाते। आवश्यकतानुसार परिस्थितियों के प्रभाव में खर्च करते जाते हैं।

Scanned with CamScanner

अतः वस्तुओं की सीमांत उपयोगिता की तुलना नहीं की जा सकती।

(v) रीति-रिवाज तथा फैशन का प्रभाव —

उपभोक्ता वस्तु बार बार कभी भी रीति-रिवाज के प्रभाव में आकर वैसी वस्तुओं पर खर्च करता है जो वस्तु या तो उसके लिए आवश्यक ही नहीं होती या कम उपयोगी होती है। चाहे शादी-विवाह या श्राद्ध का समय हो या रंगीन टेलीविजन खरीदने इत्यादि का, सीमांत उपयोगिता का ध्यान रखे बिना खर्च किया जाता है।

(vi) वस्तुओं के मूल्य में परिवर्तन :—

बाजार में तथा व्यावहारिक जीवन में वस्तुओं की कीमत में प्रायः परिवर्तन होता रहता है। इसके कारण उपभोक्ता की अपनी गणनाएँ बेकार हो जाती हैं। उनके लिए सम-सीमांत नियम का अनुसरण करना कठिन हो जाता है।

(vii) वस्तुओं का टिकाऊपन :—

कुछ वस्तुएँ टिकाऊ किस्म की होती हैं जैसे स्कूटर, टी०वी० इत्यादि, जिनका प्रयोग मात्र एक ही बार नहीं बल्कि लम्बे समय तक, कई वर्षों तक, किया जाता है। इस तरह की टिकाऊ वस्तुओं की सीमांत उपयोगिता का पता लगाना कठिन होता है।

(viii) उपभोग नियंत्रण एवं राशनिंग :—

कभी-कभी देश में वस्तुओं की कमी को ध्यान में रखते हुए वस्तुओं की राशनिंग की जाती है, उपभोग को नियंत्रण करने का प्रयास होता है। इन परिस्थितियों में भी इस नियम की क्रियाशीलता में कठिनाई होती है। यह लागू नहीं होता।

इस तरह, हम पाते हैं कि इस नियम के लागू होने के रास्ते में अनेक कठिनाइयाँ हैं। लेकिन, इनके कारण यह नियम बिल्कुल उपयोगितारहित हो जाता है, ऐसी बात नहीं है। इस नियम को उपभोग का एक आधारभूत नियम माना जाता है। इस नियम का अर्थशास्त्र के अनेक क्षेत्रों में व्यवहार किया जाता है।

Scanned with CamScanner